JAGRAN CITY.

सच्ची भावना बिना कुछ नहीं

महुआ शंकर (कथक नृत्यांगना)

कोई भी रिश्ता सच्ची भावना पर टिका होता है। मैं देखती हूं कि बहुत सी लड़कियां मुंह बोले भाई बना लेती हैं, लेकिन ऐसे रिश्तों को निभाना बहुत मुश्किल होता है। संबंधों की गहराई समझना हर किसी के वश की बात नहीं। वैसे भी, भाई-बहन का रिश्ता ऐसी चीज नहीं, जिसे रुपयों के तराजू में तौला जा सके। जहां दिल मिलते हैं, वहां प्यार भी नजर आता है। मैं अपने भाई की लंबी उम्र की कामना सच्चे दिल से करती हूं। यही नहीं, शास्त्रीय नृत्य-संगीत की परंपरा के अनुसार गुरु को भी टीका किया जाता है।

भाई से मिलने एक नहीं, दस बार जाऊंगी

भाई को लगे लंबी उमर : **महुआ शंकर**

JAGRAN CITY. 16th Mar 2007

दिल्ली में बृज की होली

होली के कई दिन बाद भी इस रंग-बिरंगे त्योहार की धूम राजधानी में छाई हुई है। पिछले दिनों तो दिल्ली में बृज की होली की छटा भी देखने को मिली। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की ओर से कमानी आडिटोरियम में कथक नृत्य की पेशकश की गई।

इस अवसर पर उभरती नृत्यांगना महुआ शंकर ने नृत्य कौशल से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

महुआ ने कथक की तीन ताल, सोलह मात्रा, विलंबित लय, उपज थाल, लड़ी, सोलह चक्र, तीन चक्र, बराबर लय, तिहाइयों आदि की सफल पेशकश की। नृत्य के जरिए उन्होंने विश्वप्रसिद्ध बृज की होली के दर्शन भी कराए।

बिंदादीन महाराज रचित 'देखो होली के खेलइया कैसे बन-बन आए...' और 'रितु बसंत आए मन भाए' सरीखे गीतों की पेशकश के दौरान महुआ का अंदाज लुभावना था। अंबिका प्रसाद, दीपक, रोमन, मतलूब और गुलाम वारिस ने संगत की। कार्यक्रम के दूसरे चरण में गायक बंधु रितेश-रजनीश मिश्रा ने ठुमरी, कजरी, होरी आदि सुनाकर लोगों को भाव-विभोर कर दिया। इस

RAJASTHAN PATRIKA